प्रकाशित: 08 दिसंबर 2017 को दैनिक जागरण में प्रकाशित -

इतिहास लेखन की विसंगतियां

रवि भट्ट

इतिहास किसी समाज की वर्तमान और भविष्य की प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करता है, फिर चाहे वह असत्य हो अथवा अर्धसत्य! एक बार यदि वह 'कलेक्टिव मेमोरी' का हिस्सा बन गया तो बस बन गया। अब यदि यह तथाकथित इतिहास अकिसी समूह विशेष के हितों को सुरक्षित रखने में सहायक होता है तो उस पर सहज ही विश्वास करना उस वर्ग विशेष की प्रवृत्ति होती है। फिल्म पद्मावती इसका एक अच्छा उदाहरण है जिसे लेकर विवाद बढ़ता ही जा रहा है। हालांकि अभी इस फिल्म को सेंसर बोर्ड की अनुमति नहीं मिली है और चंद लोग ही ऐसे हैंै जो उसकी विषय वस्तु से परिचित हैंै, लेकिन उसका विरोध करने वालों की संख्या बढ़ गई हैै। पद्मावती को ख्याति दिलाने का काम पद्मावत नामक महाकाव्य ने किया। इसे सन 1540 में सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा अवधी में लिखा गया था। यह महाकाव्य इतना लोकप्रिय हुआ कि कुछ उत्तर मध्यकालीन फारसी इतिहासकारों ने बिना किसी शोध के इसे इतिहास के रूप में लिखना आरंभ कर दिया। चूंकि इस महाकाव्य की शौर्यगाथा भारतीयों की प्रतिष्ठा स्थापित करती थी इसलिए भारतीय लेखकों ने भी इस पर अपनी मुहर लगानी शुरू कर दी। परिणामस्वरूप धीरे-धीरे जनमानस पर इस काव्य का घटनाक्रम इतिहास के रूप में दर्ज हो गया। यही कारण है कि इससे छेड़छाड़ से लोगों की भावनाएं आहत हो रही हैंै। ऐसा होना स्वाभाविक है। पद्मावत की तरह से कुछ अन्य रचनाएं भी ऐसी हैंै जिन्होंने लोगों पर गहरी छाप छोड़ी है। ब्रजभाषा में कवि चंद बरदाई द्वारा रचित महाकाव्य पृथ्वीराज रासो भी कुछ सीमा तक इसी श्रेणी में आता है। पृथ्वीराज रासो बारहवीं शताब्दी के हिंदू राजा पृथ्वीराज चौहान के जीवन पर आधारित है। इसमें कहा गया है कि पृथ्वीराज चौहान जब शहाबुद्दीन गोरी से युद्ध में हारने के बाद उसकी कैद में थे तो उन्होंने शब्दभेदी बाण चलाकर गोरी को मार डाला था। यह सही नहीं है, क्योंकि शहाबुद्दीन गोरी की मृत्यु तो पृथ्वीराज की मृत्यु के कई वर्ष बाद हुई थी। इसके बावजूद आम धारणा यही है कि पृथ्वीराज के शब्दभेदी बाण से ही गोरी की जान गई। एक आम धारणा यह भी है कि मुगल शहजादा सलीम अनारकली के प्रेम में दीवाना था। इस प्रसंग का उल्लेख इस तरह किया जाता है कि अकबर खलनायक के रूप में चित्रित होते हैंै। लोगों का इस कथा की सत्यता यानी सलीम के अनारकली के प्रेम में पड़ने का इतना यकीन था कि इस पर मुगले आजम फिल्म भी बनी। इस फिल्म की सफलता ने सलीम-अनारकली के प्रेम प्रंसग के सच होने को और आधार प्रदान किया। इसके बावजूद सत्य यही है कि अनारकली एक काल्पनिक पात्र है। ऐसे ही कई प्रसंग है जो इतिहास का हिस्सा नहीं हैंै, लेकिन आम धारणा में वे इतिहास के हिस्से की तरह हैंै।

इतिहास लेखन में एक ही सत्य को निहित स्वार्थवश विभिन्न ढंग से औरों के समक्ष रखा जा सकता है। जैसा कि सन 1764 में हुए प्रसिद्ध बक्सर के युद्ध से स्पष्ट होता है। यह युद्ध शाह आलम द्वितीय ने अवध के तीसरे शासक नवाब शुजाउद्दौला और बंगाल के नवाब मीर कासिम के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ा। इसमें उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा। नवाब शुजाउद्दौला ने हार के कारणों का विश्लेषण करने पर अपनी हार का दोषी अपने वजीर राजा बेनी बहादुर को पाया। उन पर अंग्रेजों से मिले होने का संदेह था। नवाब शुजाउद्दौला ने सजा के रूप में बेनी बहादुर की आंखों में कील ठोंकवा दी थी। इतिहासकार यदि केवल इतनी बात लिखे तो पाठक यही समझेगा कि नवाब शुजाउद्दौला एक क्रूर शासक था, किंतु यदि पूरी बात बताई जाए कि नवाब ने वजीर बेनी बहादुर को जान से इसलिए नहीं मारा था, क्योंकि एक बार उसने बेनी को वचन दिया था कि चाहे कुछ भी हो जाए वह उसे जान से कभी नहीं मारेगा तो नवाब का चरित्र दूसरे रूप में दिखेगा।

पूरे विश्व में इतिहासकारों ने इतिहास लेखन की इसी दुर्बलता का लाभ उठाया है। सम्राट अकबर ने 20 अक्टूबर 1567 से लेकर 24 फरवरी 1568 तक की लंबी घेराबंदी के बाद चित्तौड़गढ़ किले को जीतने के उपरांत हजारों गैर सैनिकों का कत्लेआम किया था। अकबर का यह कृत्य महान कहलाने वाले सम्राट के चरित्र पर एक दाग था जिसे स्वार्थवश न्यायसंगत सिद्ध करने का प्रयास अकबर के दरबारी इतिहासकार और अकबर नामा के लेखक अबुल फजल ने भी किया। यह भी देखने में आता है कि कई शासकों ने भी मिथ्या इतिहास लेखन में अपना सहयोग दिया। बतौर उदाहरण अक्टूबर 1827 में अवध की गद्दी पर बैठने वाले अवध के आठवें शासक नवाब नसीरउद्दीन हैदर एक बार भज्जो नामक गणिका की अति सुंदर बेटी हुसैनी को एक कार्यक्रम में नाचते गाते देखकर उस पर इतना मोहित हुए कि न केवल उससे शादी कर डाली वरन उसे खुर्शीद महल का खिताब भी दे दिया। उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि को सम्मानित दिखाने के लिए नवाब नसीरउद्दीन ने मिर्जा हुसैन बेग नामक व्यक्ति को उसका फर्जी पिता भी घोषित करवा दिया।

व्यवस्थित इतिहास लेखन यूरोप से आरंभ होकर भारत आया। संभवत: इसीलिए अंग्रेज इसके दुरुपयोग की कला में भी माहिर थे और यह काम उन्होंने भरपूर तरह से भारत में किया भी। फरवरी 1856 में अवध के अंतिम शासक नवाब वाजिद अली का राज्य हड़पने के पहले अंग्रेजों ने उन पर कुप्रबंध का आरोप लगाना शुरू कर दिया था, जबकि सत्य यह है कि वह कुशल प्रबंधक थे और उन्होंने स्वयं शासन के प्रबंध पर एक पुस्तक लिखी थी जिसका नाम था दस्तूर-ए-वाजिदी। इसके अलावा भी उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं। वह साहित्य, संगीत, कला के भी पारखी थे। चूंकि अंग्रेजी लेखकों ने उनके खिलाफ दुष्प्रचार किया इसलिए भारत तो दूर, आज अवध के लोग भी यह समझते हैं कि नवाब वाजिद अली नृत्यकला में निपुण थे। इतिहासकार मिर्जा अली अजहर के अनुसार वाजिद अली ने कभी नृत्य नहीं किया। चूंकि इस्लाम में नाचने को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता इसलिए अंग्रेजों ने उन्हें बदनाम करने के लिए उनकी नाचने की मुद्रा में झूठी तस्वीरें बनवाकर भारत के विभिन्न संग्रहालयों में रखवा दी थीं। इतिहासकार अब्दुल हलीम 'शरर' का भी अपनी पुस्तक जान-ए-आलम में कहना है कि नवाब नृत्य नहीं करते थे, किंतु वह नृत्य पारखी थे। गलत नृत्य पर वह पलंग पर बैठे हुए ही अपने हाथों को उठाकर सही मुद्रा

बनाते हुए कहते, 'उस तरह नहीं इस तरह।' कुटिल अंग्रेज लेखकों ने यही फायदा उठाकर यह लिखना शुरू कर दिया कि वाजिद अली तो नाचते थे। ये तो बस कुछ उदाहरण हैं इतिहास लेखन की कमजोरियों या इतिहासकारों के स्वार्थ के। इतिहासकारों के स्वार्थ और उनकी कमजोरियों के प्रति हमें सावधान रहना चाहिए।

[लेखक इतिहासकार है]

-